किशोरियों की मदद के लिए बढ़ाया हाथ

मनोज कुमार जनागल
बीकानेर, राजस्थान

वैश्विक महामारी कोरोना की वजह से लगाए गए लॉकडाउन के कारण सभी सामाजिक और आर्थिक गतिविधियां रुक गई हैं। हालांकि कोरोना के फैलाव को रोकने के लिए लॉक डाउन आवश्यक हो गया था। लेकिन इससे लोगों को काफी असुविधाओं का भी सामना करना पड़ रहा है। विशेषकर देश के दूरदराज के गांव में कठिनाइयां और भी बढ़ गई हैं। देश के मरुस्थलीय राज्य राजस्थान के कई ऐसे गांव हैं जहां अति आवश्यक सेवाएं समय से लोगों तक पहुँच नहीं पा रही हैं। इन्हीं आवश्यक सेवाओं में एक महिला एवं किशोरियों द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाला सेनेटरी नैपकिन है। जो विशेषकर किशोरियों की पहुँच से दूर हो गया है। इन लड़कियों को स्कूल में हर महीने सेनेटरी पैड मिलते थे, लेकिन लाॅकडाउन के बाद स्कूल बंद हो गए।

जोधपुर जिले के ओसियां ब्लॉक में उरमूल ट्रस्ट और उसकी सहयोगी संस्था के सहयोग से 5 पंचायतों के 13 गांवों में 'शादी बच्चों का खेल नहीं' परियोजना चलाई जा रही है। इसके माध्यम से किशोरी बालिकाओं को यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया जाता है। लॉक डाउन के बाद परियोजना की क्षेत्र समन्वयक रेणु गॉड फोन के माध्यम से ही लोगों को कोरोना से बचाव के बारे में लगातार जागरूक कर रहीं थी। तभी किशोरियों के माध्यम से उन्हें सेनेटरी नैपकिन की कमी के बारे में पता चला, जिसके कारण किशोरियों को महावारी के समय कपड़े का प्रयोग करना पड़ रहा था। कुछ किशोरियों ने मिलकर गांव में आंगनबाड़ी सेंटर से संपर्क किया, परंतु वहां भी उन्हें सेनेटरी नैपकिन उपलब्ध नहीं हो सका। थोब पंचायत से किशोरी बालिका उर्मिला ने रेणु जी को फोन कर बताया कि "घर में मम्मी और बहन के अलावा सभी पुरुष हैं, जिनसे यह बात नहीं कह सकती। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण कई लड़कियां मेडिकल स्टोर से नैपकिन खरीदने में असमर्थ हैं। ऐसे में घर की महिलाएं उन्हें कपड़ा इस्तेमाल करने को देती हैं।"

थोब गांव में फेडरेशन समूह की किशोरियों ने इस समस्या को लेकर एसडीएम को एक ज्ञापन भी लिखा। परंतु लॉकडाउन की वजह से व्यस्तता के कारण वह ज्ञापन स्वीकार नहीं कर सके। इस बात से रेणु बहुत निराशा हुई पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और लगातार अपने स्तर पर प्रयास करती रहीं। रेणु ने ओसियां उप स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर विवेक से मिलकर उन्हें सेनेटरी नेपकिन नहीं मिलने के कारण हो रही किशोरियों की समस्याओं से अवगत करवाया। डॉ विवेक ने हालात को समझते हुए सेनेटरी नैपकिन की उपलब्धता को सुनिश्चित किया।

परंतु सबसे बड़ी समस्या इन नैपकिन को दूर दराज़ गांवों में किशोरियों तक पहुंचाने की थी। जबकि लॉक डाउन के कारण कोई साधन उपलब्ध नहीं था। ऐसी स्थिति में रेणु गाॅड ने सेनेटरी नैपकिन किशोरियों तक खुद जाकर पहुंचाने का निश्चय किया और उन्होंने गांव गांव जाकर किशोरियों को 144 सेनेटरी नैपकिन के पैकेट वितरित किए। गांव की किशोरियां रेणु जी की इस पहल से बेहद खुश हुई और सभी ने उनका धन्यवाद किया। वास्तव में संकट की इस घड़ी में रेणु गॉड की यह पहल हम सब के लिए अनुकरणीय है।